Janbharat Mail 30-3-2023

लचीला परिदृश्य के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

दहरादून, स्त्वाददाता। मारताय वानका अनुसंधान और शिक्षा परिषद (आई सी एफ आर ई) देहरादून और इंटरनेशनल यूनियन ऑफ फॉरेस्ट रिसर्च ऑर्गेनाइजेशनस (आईयूएफआरओ) द्वारा संयुक्त रूप से लचीला परिदृश्य के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्टी का आयोजन 29-30 मार्च, 2023 को किया जा रहा है। 29-30 मार्च, 2023 को किया जा रहा है। इस संगोधे में भारत, अमेरिका, ब्रिटेन, ऑस्ट्रिय, कनाड़, जर्मनी, नीररलैंड, नेपाल, चीन, अस्ट्रिया, बांप्लारेड्ड, भूटान, प्यामद, इंस्प्योपिया, मलावी, चीन और औरकंक से कुल मिस्ताकर 225 जानिकी, कुपि, प्रकृति सरक्षण, जल संसापन प्रबंधन और खनन के धेत्रों के विशेषज्ञ और बैजानिक सम्मिलित हों रहे हैं जो क्षरित हुई भूमि और वनों की बहाली के मुद्दों और इसके लिए अंतरक्षेत्रीय नीति और योजना समन्वय बह्मने पर चर्चा करेंगे तथा इस दिशा में हुए प्रयासों और अनुभवों को साझा करेंगे। कार्यक्रम की शुरुआत आज आईसी-एफआरई के सभागार में उदाटन समारोह के साथ हुई। श्री सुभाष चंद्रा, सीईओ, कैम्पा, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रा-लय, भारत सरकार कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। डॉ. जॉन ऐ.पैरोटा, प्रोग्राम लीडर, यू.एस. फ़ॉरेस्ट सर्विस, ने अध्यक्ष के रूप में आईयूए-फआरओ का प्रतिनिधित्व किया।

देहरादून, संवाददाता। भारतीय वानिकी

श्री आर.के. डोगरा. प्रभारी निदेशक. आईसी-एफआरई-एफआरआई, देहरादून ने गणमान्य व्यक्तियों, विशेष आमंत्रितों, विभिन्न संगठनों के



कार्यक्रम, हरित भारत मिशन और नगर वन योजना आदि जैसी विभिन्न योजनाओं के तहत त्रितालय के चला रहे प्रयासों को भी साझा किया। सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा किया। स्तत ावकास क लिए 2030 एजडा के लक्ष्यों के तहत इस संगोधी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, श्री अरुण सिंह रावत, महानिदेशक, आई सी एफ आर हैं ने भारत सरकार की वन और भूमि उत्पादकता वृद्धि योजनाओं के निष्पादन में मंत्रालय के साथ मिलकर काम करने में आईसीएफआरई की प्रतिबद्धता को बताया। उन्होंने इस दिशा में परिषद् की महत्वपूर्ण पहलों के बारे में जानकरी दी। इनमें भारत के विभिन्न भागों में कोलमाइन ओवरबर्डन, लाइम स्टोन माइन्स, सोडिक मिट्टी, क्षरित पहाड़ियों, जलभराव क्षेत्र और

रेगिस्तानी टीलों की बहाली के लिए समग्र

पैकेज का विकास, वानिकी के माध्यम से 13 प्रमुख नदियों के पुनरुद्धार के लिए डीपीआर

तैयार करना, मंत्रालय के हरित कौशल विकास कार्यक्रम का क्रियान्वयन, 129 लौह और मैंगनीज अयस्क खानों के सुधार और पुनर्वास की योजना शामिल हैं। उन्होंने विशेष रूप से सतत भूमि प्रबंधन पर आईसीएफआरई उत्कृष्टता केंद्र में चल रहे प्रयासों का भी उल्लेख किया। उन्होंने प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन शिक्षा में पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली के लिए बिम्सटेक क्षेत्र में देशों के बीच सहयोग बढ़ाने में आईयूएफआरओ के साथ आई सी एफ आर ई के सक्रिय सहयोग पर भी बात की।

उन्होंने प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन शिक्षा में पारिस्थितिको तंत्र की बहाली के लिए बिम्सटेक क्षेत्र में देशों के बीच सहयोग बड़ाने में तथा इस संगोष्टी की मेजबानी में आ-ईयुएफआरओ के साथ आई सी एफ आर ई के सिक्रय सहयोग का भी जिक्र किया

फआरओ, इसके उद्देश्यों जीविका और मानव कल्याण हेतु चलाये जा रहे और पारिस्थितिक संदर्भ में वनों और वनों के बाहर आर भावस्थाक सदम में वना आर वना के बाक़ कुशों की भूमिका को व्यक्त करते हुए, उन्होंने धरित हुई भूमि की बहरती के लिए सामृहिक रूप से काम करने के लिए दुनिया भर में अंतर क्षेत्रीय सहयोग और सहयोग पर जोर दिया। सत्र के पश्चात. प्रतिभागियों द्वारा मसरी हिल्स

सत्र क पश्चात, प्रातमागया द्वारा मस्त्रा हिल्स और राजाजी नेशनल पार्क का भ्रमण किया गया, जहां उन्हें चूना पत्थर खनन क्षेत्रों और खरिवस्त पखड़ी क्षेत्रों की बहाती के लिए विकस्तित किये गए तरीकों और कई अलग-अलग क्षेत्रों की वानस्पति, और वन प्रकार तथा वन्य जीवन प्रबंधन के बारे में जानकारी दी गयी। संगोष्ठी के आयोजन सचिव झॅ. दिनेश कमार द्वारा प्रस्तावित धन्यवाद प्रस्ताव के साथ सत्र का समापन हुआ। . डॉ. जॉन ए, पैरोटा ने अपने संबोधन में आईयूए- सत्र का संचालन सुन्नी विजया रात्रे ने किया।





स्थानीय समुदायों की समग्र प्रतिभागिता सुनिश्चित करने, और जलवायु-स्मार्ट वानिकी और कृषि प्रथाओं का उपयोग करने का सुझाव

दिया जिससे भूमिक्षरण को रोका जा सके। इस संबंध में उन्होंने कैम्पा, राष्ट्रीय वनीकरण

Rashtriya Sahara 30-3-2023

मंथन को दून में जुटे देश-विदेश के विशेषज्ञ

🔳 सहारा न्यूज ब्यूरो

देहरादून।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद (आईसीएफआरई) व

इंटरनेशनल यूनियन ऑफ फॉरेस्ट आर्गेनाइजेशन (आईयूएफआरओ) द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय गोष्ठी बुधवार से शुरू हो गई है।

देहरादून स्थित आईसीएफआरई के सभागार में आयोजित हो रही दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय गोष्ठी में मेजबान भारत के अलावा अमेरिका, ब्रिटेन, अस्ट्रिया, कनाडा, जर्मनी, नीदरलैंड, नेपाल, चीन, अर्जेंटीना, बांग्लादेश, भूटान, म्यांमार, इथियोपिया, मलावी, चीन और श्रीलंका के कुल 225 विषय विशेषज्ञ प्रतिभाग कर रहे हैं। 'लचीला परिचय के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग' विषय पर आयोजित गोष्ठी का

अभारंभ बतौर मुख्य अतिथि पर्यावरण, वन व जलावायु परिवर्तन मंत्रालय के सीईवो सुभाष चंद्रा ने किया।

उन्होंने पर्यावरण के प्रति जागरूक जीवनशैली के लिए सतत विकास - 2030 एजेंडा के लक्ष्यों पर प्रकाश डाला। इसके अलावा प्रधामंत्री नरेन्द्र मोदी के लाइफ मिशन पहले के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कृषि वानिकी व प्रकृति संरक्षण केक्षेत्र में आपसी सहयोग बढ़ाने पर जोर दिया। विभिन्न हितधारकों व स्थानीय समुदायों की समग्र प्रतिभागिता सुनिध्वत करने के साथ ही जलवायु स्मार्ट वानिकी का सुझाव भी उन्होंने दिया। इस संर्दभ में कैंपा, राष्ट्रीय वनीकरण कार्यक्रम, हरित भारत मिशन व नगर वन योजना के बारे में भी उन्होंने जानकारी दी।

आईसीएफआरई के महानिदेशक अरुण सिंह यवत ने गोष्ठी में शिरकत कर रहे देश-विदेश के प्रतिनिधियों का स्वागत किया। उन्होंने भारत सरकार की वन और भूमि उत्पादकता वृद्धि योजनाओं के निष्पादन में मंत्रालय के साथ मिलकर काम करने में आईसीएफआरई की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। इस दिशा में परिषद द्वारा की जा रही महत्वपूर्ण पहलों की जानकारी भी उन्होंने दी।

उन्होंने बताया कि भारत के विभिन्न भागों में कोलमाइन ओवरबर्डन, लाइम स्टोन माइन्स, सोडिक मिट्टी, क्षरित पहाड़ियों, जलभराव क्षेत्र और रेगिस्तानी टीलों की बहाली के लिए समग्र पैकेज का विकास, वानिकी के माध्यम से 13 प्रमुख नदियों के पुनरुद्धार के लिए डीपीआर तैयार करना, मंत्रालय के हरित कीशल विकास कार्यक्रम का क्रियान्ययन, 129 लौह और मैंगनीज अयस्क खानों के सुधार और पुनर्वास की योजना भी शामिल है। आईसीएफआई में वो व्वित्तीय अंतरराष्ट्रीय गोष्ठी शुरू, सीईओ सुभाष चंद्रा ने किया उद्घाटन

 कृषि वानिकी, भूमि उत्पादकता और प्रकृति संरक्षण के लिए आपसी सहयोग पर जोर

आयोजन सचिव डा.दिनेश कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया। बताया कि गोष्ठी में राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय संगठनों का प्रतिनिधित्व करने वाले 27 वक्ता नौ विभिन्न विषयों पर विशेष व्याख्यान देंगे। 50 शोध पत्र भी इस दौरान प्रस्तुत किए जाएंगे। श्रोथार्थियों के लिए पोस्टर प्रतियोगिता भी आयोजित की जाएगी। विजया रात्रे ने कार्यक्रम का संचालन किया।

Punjab Kesari 30-3-2023

वन और मिट्टी बचाने को एफआरआई में जुटे विशेषज्ञ

पर्यावरण के प्रति जागरूक जीवन शैली बेहद आवश्यक

देहरादून, 29 मार्च (ब्यूरो) : वन व मिट्टी के क्षरण को रोकने के लिए देश व विदेश के विशेषज्ञ भारतीय वानिकी संस्थान (एफआरआइ) में जुटे हैं। दो दिवसीय कार्यशाला में विभिन्न देशों के प्रतिनिधि स्मार्ट वानिकी व अपने अनुभव साझा कृषि करने का करेंगे, जिसके आधार पर अन्य देश कार्ययोजना तैयार कर सकेंगे। कार्यशाला का आयोजन भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद और इंटरनेशनल यूनियन ऑफ फॉरेस्ट रिसर्च ऑर्गेनाइजेशनस संयुक्त रूप से कर रहा है।

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि कैम्पा परियोजना के सीईओ सुभाष चन्द्रा ने अलग-अलग देशों
 के प्रतिनिधि साझा
 करेंगे अनुभव

कहा कि पर्यावरण के

प्रित जागरूक जीवन
शैली बेहद आवश्यक
है। स्थानीय समुत्यों की
भागीदारी के साथ ही
जलवायु-स्मार्ट वानिकी और कृषि
प्रथाओं का उपयोग किया जाना है।
उन्होंने कैम्मा, राष्ट्रीय वनीकरण
कार्यक्रम, हरित भारत मिशन और नगर
वन योजना आदि जैसी विभिन्न
योजनाओं के तहत मंत्रालय के चल रहे



आईसीएफआरई में आयोजित सम्मेलन में मंचासीन प्रतिनिधि।

प्रयासों को भी साझा किया। परिषद के महानिदेशक अरुण सिंह रावत ने कहा कि भारत के विभिन्न भागों में वन व भूमि को लेकर कार्य किए जा रहे हैं। जलभगव क्षेत्र और रेगिस्तानी टीलों की वहाली के लिए समग्र पैकेज का विकास किया जा रहा है और वानिकी के माध्यम से 13 प्रमुख

निंदियों के पुनरुद्धार के लिए डीपीआर तैयार की जा रही है। उन्होंने प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन शिक्षा में पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली के लिए विस्सटेक क्षेत्र में देशों के बीच सहयोग की भी चर्चा की।

उद्घाटन सत्र के बाद प्रतिभागियों द्वारा मसूरी की पहाड़ियों और राजाजी नेशनल पार्क का भ्रमण किया गया। भ्रमण के दौरान प्रतिभागियों को चूना पत्थर खनन क्षेत्रों और क्षतिप्रस्त एहाड़ी क्षेत्रों की बहाली के लिए विकसित किये गए तरीकों की जानकारी दी गई। प्रतिभागियों ने अलग-अलग क्षेत्रों की वनस्पति, वन प्रकार तथा वन्य जीवन प्रबंधन को भी भ्रमण के माध्यम से समझा। इस दौरान डाँ. जॉन ए. पैरोटा, आरके डोगरा, डा. विनेश कुमार, विजया रात्रे ने भी अपने विचार साझा किए।

कार्यशाला में भारत के अलावा अमेरिका, ब्रिटेन, ऑस्ट्रिया, कनाडा, जर्मनी, नीदरलंड, नेपाल, चीन, अर्जेटीना, बांग्लादेश, भूटान, म्यामा, अर्थेटीपा, मलावी, चीन और श्रीलंका के प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं।

Amar Ujala 31-3-2023



अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में बोलते विशेषज्ञ। - संवाद

वानिकी, कृषि पर साझा किए विचार

देहरादून। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद (आईसीएफआरई) और इंटरनेशनल यूनियन ऑफ फॉरेस्ट रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन (आईयूएफआरओ) ने अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

संगोष्ठी में भारत सहित 17 देशों के 225 विशेषज्ञों ने वानिकी, कृषि, प्रकृति संरक्षण, जल संसाधन प्रबंधन और खनन पर विचार साझा किए। पोस्टर सत्र में प्रतिभागी शोधार्थियों ने 50 शोधपत्र भी प्रस्तुत किए। इस दौरान महानिदेशक आईसीएफआरई एएस रावत, अध्यक्ष आईयूएफआरओ डॉ. जॉन पैरोटा, डॉ. माइकल क्लेन मौजूद रहे। मा.सि.रि.

The Times of India 30-3-2023

Two-day int'l symposium on resilient landscapes begins; 225 experts from 17 countries to participate

Shivani.Azad@timesgroup.com

Dehradun: A two-day international symposium on 'international cooperation for resilient landscapes' was inaugurated by Compensatory Afforestation Fund Management and Planning Authority (CAMPA), MoEF&CC CEO Subhash Chandra on Wednesday.

The symposium is jointly hosted by the Indian Council of Forestry Research and Educa-

tion (ICFRE), Dehradun, and International Union of Forest Research Organizations (IU-FRO) from March 29 to 30, 2023 at ICFRE auditorium. As many as 225 experts from 17 countries are participating in the event.

Chandra elaborated on the objectives of the 'LIFE' mission, an initiative by Prime Minister Narendra Modi for an environmentally conscious lifestyle. He suggested all stakeholders "venture into cli-

culture practices for building resilient landscapes.

ASRawat, DG, ICFRE, highlighted the significance of the ongoing symposium under the goals of the '2030 agenda for sustainable development' and mentioned the ongoing efforts of the ICFRE centre for excellence on sustainable land management (CoE-SLM) to address land degradation issues.

John A Parrotta, representing IUFRO as its president at the event, advocated inter-sec-

mate-smart forestry and agri- toral cooperation and collaboration across the globe to collectively work on building resilient landscapes.

After the inaugural ceremony, participants went on tour to Mussoorie hills and Rajaji National Park. In Mussoorie, they saw Shorea robusta (Sal tree), Pinus roxburghii (Chir Pine), and Cedrus deodara (Deodar) forests and in Rajaji National Park, they experienced the vegetation of several distinct zones and forest types and wildlife.

STITUTE OF MEDICAL EDUCATION & RESEARCH CHANDIGARH
(SP)222-33/G/13 Phone No. 0172-2756469

The Pioneer 30-3-2023

'Inter-sectoral cooperation vital to tackle ill effects of developmental activities'

PNS ■ DEHRADUN

ooperation among agri-Coulture, forestry, horticulture, agroforestry and nature conservation sectors, development of policies and strategies that ensure participation of different stakeholders in an inclusive and transparent manner, and use of sustainable and climatesmart forestry and agriculture practices for building the resilient landscapes can tackle the harmful effects of developmental activities on the environment and landscape. The Compensatory Afforestation Management and Planning Authority (CAMPA) chief executive officer Subhash Chandra said this as the chief guest at the inauguration of the two-day international symposium on international cooperation for resilient landscapes hosted jointly by the Indian Council of Forestry Research and Education (ICFRE) and International Union of Forest Research Organisations (IUFRO).

Chandra also spoke about the objectives of Lifestyle For Environment (LiFE) mission launched by Prime Minister Narendra Modi and the ongoing efforts of the ministry of Environment, Forests and Climate Change under its various schemes including CAMPA, the National Afforestation Programme, Green India mission, and the Nagar Van scheme among others.

The ICFRE director gen-

eral Arun Singh Rawat spoke about the important initiatives of the ICFRE like development of suitable restoration models with package of practices for restoration of coalmine overburdens, limestone mines, sodic soils, degraded hills, waterlogged area and desert dunes stabilisation in different parts of India, preparation of DPR for rejuvenation of 13 major rivers through forestry interventions and other tasks.

Representing IUFRO, the programme leader of international science issues with the US Forest Service John A Parrotta talked about the IUFRO, its objectives and programmes for long-term sustenance and human wellbeing. Referring to the role of the forests and trees outside forests in the socio-economic and ecological context, he advocated inter sectoral cooperation and collaboration across the globe to collectively work on building resilient landscapes.

It is pertinent to mention here that 225 participants comprising experts and scientists from the fields of forestry, agriculture, nature conservation, water resources management from India, USA, UK, Austria, Canada, Germany, The Netherlands, Nepal, China, Argentina, Bangladesh, Bhutan, Myanmar, Ethiopia, Malawi, China, and Sri Lanka are participating in the symposium.

The Hawk 30-3-2023

International Symposium On International Cooperation For Resilient Landscapes



Dehradun (The Hawk):
A two days International Symposium on International Cooperation for Resilient Landscapes is Resilient Landscapes is Resilient Landscapes is Resilient Landscapes is the International Council of Forestry Research and Education (ICFRE), Dehradun and International Union of Forest Research Organizations (UIFRO) from March 29-30, 2023 at ICFRE. Altogether 225 no of participants comprising of experts and scientists from the fields of forestry, agriculture, nature conservance of the International Council C

presented the genesis of the symposium.

Highlighting the harmful effects of development activities on environment and landscapes, Shri Subhash Chandra spoke on the objectives of the LIFE mission initiative by our Homble Prime to be used to be constituted to the conscious lifestyle. He suggested various ways including cooperation of agriculture, forestry, horticulture, agroforestry and nature conservation sectors, development of policies and strategies that ensure participation of different stakeholders such as

governments, civil society, the private sector and local communities in an inclusive and transparent manner, and use of sustainment, and use of sustainment, and use of sustainment, and use of sustainment, and the sustainment and transpared the ongoing efforts of the ministry under its various schemes such as CAMPA, the National Afforestation Programme, Green India mission, and Ho Nagar Van scheme, etc. 1997. The sustainment of the Sustainment of the Sustainment of the Cereta of General, ICFRE expressed the commitment of the ICFRE in working closely with the Ministry in execution of plans of the Gowt of India addressing forest degradation and problems affecting forest degradation and problems affecting forest consultation of plans of the Gowt of India addressing forest degradation and problems affecting forest disparent of the ICFRE like development of suitable restoration models with package of practices for restoration of coalmine overburdens, lime stone mines, sodic solis, degraded hills, waterlogged area and desert dunes stabilization in different parts of India, preparation of DPR Rofostillowers of Program of the Ministry, and preparation of Reclamation and Rehabilitation (R&R) Plan of 129 Iron and Managament (CoE-SLM) to address land degradation issues. Rel also spoke on active collaboration of CFRE with UtrRO in enhancing cooperation among countries in the BIMSTEC region for each system restoration in acus.

BIMSTEC region for eco-system restoration in natu-ral resources management education and hosting this symposium as well. Dr. John A. Parrotta in his address talked about

the IUFRO, its objectives and programmes for long-term sustemance and hu-man well-being. Expressing the role of the forests and Tree Outside Forests in socio-economic and ecological context, he advocated inter sectoral control of the control of t

building resitient land-scapes. After inaugural ceremony, participants went for an excursion tour to Musscorie Hills and Rajaji National Park. In Musscorie Hills, they vis-ited Shorea robusta (Sal), Pinus roxburghii (Chir Pinus roxburghii (Chir Docdar) forests and learnt boott practices for eco-res-toration of limestone min-ing areas and degraded about practices for eco-res-toration of limestone min-ing areas and degraded sites on the hills. In Rajaji National Park, they exper-enced the vegetation of several distinct zones and forest types and wildlife. During two days, land-scape restoration issues, experiences on innovative approaches to landscape restoration; and intersectoral policy and planning coordination will be defined to the control of the control was ended with the vote of thanks proposed by Dr. was ended with the vote of thanks proposed by Dr. Dinesh Kumar, organising secretary of the symposium. The ses-sion was conducted by Ms. Vijya Ratre.